H-1

अगर याद आऊं तो घबरा न जाना,
न मेरे लिये कोई आंसू बहाना।
मैं खुद को यहीं छोड़ कर जा रहा हूं,
मैं कब तुम से मुंह मोड़ कर जा रहा हूं।
है कृपाल मेरी मुहब्बत-मुजस्सम[1],
लताफ़त[2] सरापा[3] है असमत मुजस्सम[4]।
मुझे ढूंढना उसकी सूरत में जा कर,
मुझे देखना उसकी मूरत में जा कर।
कि मैं भी उसी हुस्न[5] की रोशनी था,
बज़ाहिर[6] नहीं था, मगर मैं वही था।
करो भजन-सिमरन तुम आ जाओ अन्तर,
मेरा ध्यान धर के तुम आओ निरन्तर।
तुम आ के मेरे बच्चो मुझ में समा जाओ,
मैं राह तक रहा हूं, मेरे पास आओ।

1. प्रेम रूप, 2. पवित्र, 3. सिर से पैर तक, 4. सत्कार की प्रतिमा,
5. सुन्दरता, 6. प्रकट।

H-2

अपनी दुनिया के लिये गर तुझ को पा सकता हूं मैं।
ज़र्रा ज़र्रा रश्क-ए-सद जन्नत[1] बना सकता हूं मैं।
तेरी शान-ए-रंग-ओ-बू[2] की बरकरारी के लिये,
ख़्वाह[3] अपनी तमन्ना[4] को मिटा सकता हूं मैं।
उनका वो इकरार-ए-उलफत[5] वो निगाह-ए-मस्त-मस्त,
दिल से उन पुरकैफ[6] लम्हों[7] को कब भुला सकता हूं मैं।
इस ख़्याल-ए-परदादारी[8] है अनागर-ए- जुबां[9],
वरना हर नुकते से अफ़साना[10] बना सकता हूं मैं।
बेखुदी[11] पर हो जो तेरी इक निगाह-ए-इलतफ़ात[12],
धज्जियां कर दामन-ए-गुल[13] की उड़ा सकता हूं मैं।
मुंतज़िर[14] हूं जलवे खुद मजबूर हो जायें तेरे,
वरना जब चाहूं नकाब रुख[15] से उठा सकता हूं मैं।
गर ये ही है जोश-ए-वहशत[16] गर यही जज़बा-ए-दिल,
तुम को भी इक रोज़ दीवाना[17] बना सकता हूं मैं।
मेरी हालत देख ज़ालिम ओ मेरी फ़ितरत[18] पर न जा,
इन्तहा-ए-दर्द[19] में भी मुस्करा सकता हूं मैं।
'जमाल' मुझ से जब छिन जाये मेरी बहार-ए-ज़िन्दगी[20],
लुत्फ[21]-ए-हस्ती उम्र भर तब क्या उठा सकता हूं मैं।

1. सैंकड़ों स्वर्गों से अच्छा, 2. सुन्दर शान और खूशबू, 3. चाहे, 4. इच्छा, 5. प्रेम का इकरार, 6. नशीला 7. समय 8. पर्दे में रखना, 9. ज़बान को लगाम 10. नावल 11. बे-खबरी, 12. कृपा दृष्टि 13. सुन्दर पल्ला 14. इंतज़ार में 15. चेहरे से परदा, 16. पागलपन का जोश, 17. पागल 18. स्वभाव, 19. दर्द की चरम सीमा 20. जीवन की खुशी, 21. आनंद

H-3

आंख पाती है ज़िया[1] सावन तेरे दीदार से,
रूह पाती है फ़िज़ा[2] प्यारे तेरे प्यार से।
याद आती है तेरी सावन हर शाम-ओ-सहर[3],
गैरत-ए-कुदरत[4] तू है रश्क-ए-शम्स-ओ-क़मर[5]।
रहबर-ए-राह-ए-निजात[6] है तू सब के वास्ते,
प्रेम का सोमा है तू हर दिल के वास्ते।
है दवा-ए-हर रंज-ओ-अलम[7] उपदेश मेरे सावन का,
मस्त हो जाते सभी ले ले नाम मेरे सावन का।
हुस्न का इक बहर-ए-बेपायां[8] मेरे सत्गुरु तू है,
नूर का बढ़ता हुआ तुफ़ां मेरे सत्गुरु तू है।
तू मुजस्सम नूर है सारे जहां के वास्ते,
तू चिराग़-ए-बज़्म[9] है कौन-ओ-मकां[10] के वास्ते।
दिल वही जो जान बहर-ए-हुस्न[11] और कान-ए-जमाल[12],
बर्क[13] से भी तेज़ है तेरी कुबक[14] रफ्तार।

1. प्रकाश, 2. वृद्धि, 3. सुबह शाम, 4. कुदरत का कमाल, 5. सूर्य और चांद जैसा बनने की भावना, 6. मुक्ति का रास्ता दिखाने वाला 7. हर दुख और दर्द की दवा 8. अथाह समुद्र, 9. महफिल की रोशनी 10. संसार, 11. हुस्न का समुद्र, 12. प्रकाश की खान 13. बिजली, 14. कबूतर।

H-4

आंख में याद बसी उनकी तमन्ना[1] बन कर।
अश्क[2] बन बन के गिरी जब कोई चारा न रहा।
किस लिए ज़ीस्त[3] की ख्वाहिश है तुम्हें ऐ जमाल।
रूह को तन न रहा तन को सहारा न रहा।
जमाल इस जहां में कोई नहीं किसी का।
देते हैं सब दिखाई अपने बेगाने जम से।
कौन आए इस अन्धेरी रात में तेरे सिवा।
मेरे ग़मखाने[4] को नूरानी बनाने के लिए।
दुनिया रही दुनिया हमें पूछा न खुदा ने।
नज़र में उन का तसव्वुर[5] है वो हैं नामालूम।
पता ही उनका है मालूम और न जा मालूम।
निगोड़ी हिचकियां देती तो हैं पयाम[6] उन का।
मगर वो लाएंगे तशरीफ़ कब खुदा मालूम।
खुदा जाने समाए किस तरह हैं मेरी आंखों में।
ये आंसू वरना इक तूफान बरपा[7] करने वाले हैं।
धूल तक जिस की न उड़े वो नमूदार[8] हूं मैं।
जिस का चारा न हो दुनिया में वो लाचार हूं मैं।
चैन आता ही नहीं दम भर फ़िराक-ए-यार[9] में।
कब तलक तड़पा करूं मैं या इलाही[10] क्या करूं।

1. इच्छा, 2. आंसू, 3. ज़िंदगी, 4. दुखों का घर, 5. ध्यान, 6. संदेश, 7. बरसाना 8. गीला, 9. मित्र का वियोग, 10. हे प्रभु।

H-5

आ रही है यह सदा[1] कान में वीरानों[2] से,
कल की है बात कि आबाद थे दीवानों से।
पांओं पकड़े न कहीं कूचा-ए-जानां[3] की ज़मीं,
ख़ाक उड़ाता मैं निकल जाऊं बियाबानों[4] से।
तिनके चुन जा के कहीं कूचा-ए-जानां में तू,
क्यों उलझता है अबस[5] चाक गिरेबानों[6] से।
आंख उठा कर न किसी सिम्त[7] क़फ़स[8] में देखा,
मौसम-ए-गुल[9] की ख़बर सुनते रहे कानों से।
चलते-चलते तो गुल-ए-शमा[10] से मिल लें उठ कर,
है सहर[11] होने को कह दे कोई परवानों[12] से।

H-6

इक दर्दमन्द दिल की हालत तुम्हें बतायें,
क्या चीज़ है मुहब्बत आओ तुम्हें सुनायें।
अफ़्शां-ए-राज़-ए-उलफ़त[13] तौहीन-ए-आशिकी[14] है,
मिट जाएं लब[15] पे लेकिन क्यों नाम उनका लायें।
दुनिया से क्या ग़र्ज़ है, दुनिया से पूछना क्या,
मैं तुझ से पूछता हूं क्या चीज़ हैं वफ़ायें[16]।
बीमार ने ये कह कर फ़ुरकत[17] में जान दे दी,
अब कौन राह देखे वह आयें या न आयें।
मुझ को जगाने वाले अब खुद भी जागते हैं,
मजबूर दिल की आहें ख़ाली गई न जायें।

1. आवाज़, 2. उजाड़, 3. प्रीतम की गली, 4. जंगल, 5. व्यर्थ, 6. फटी झोलियों 7. तरफ 8. पिंजरा 9. बसंत 10. फूलों का दीपक, 11. सुबह 12. पतंगे 13. प्यार का भेद खोलना 14. प्रेम का अपमान 15. होंठ, 16. भक्ति, 17. याद।

H-7

इधर देखता हूं, उधर देखता हूं,
सावन ही सावन है, जिधर देखता हूं।
जहां तक शम्स-ओ-कमर[1] देखता हूं,
वहीं से तुझे जलवागर[2] देखता हूं।
न मुर्ग-ए-चमन[3] गुफ्तगू[4] कर रहे हैं,
सावन ही सावन तू ही तू कर रहे हैं।

H-8

इतना बन बन के मेरी जान जलाते क्यों हो?
जो तुम्हें भाता नहीं उसको बुलाते क्यों हो।
गर मेरे घर का उजाला तुम्हें मंजूर नहीं,
मुझ सियाह-बख्त[5] से फिर आंख मिलाते क्यों हो?
आये बालीन[6] पे मेरी नाज़ से हंस कर बोले,
जां से प्यारा हूं तो फिर जान से जाते क्यों हो?
ऐ मेरे जान-ए-दिल कभी सोचा है यह भी तुमने,
बार-बार आ के तसव्वुर[7] में सताते क्यों हो?
है सितम[8] तुम सदा रहते हो जुदा हम से,
फिर तुम ही मुझे सब से ज़्यादा भाते क्यों हो?
इक घड़ी बैठो ज़रा दिल को लुभाते जाओ,
नींद आई ही नहीं तो फिर नींद के माते[9] क्यों हो?
इश्क में ऐश कुछ नाम नहीं है प्यारे,
मुफ़्त में जान को यह रोग लगाते क्यों हो?

1. सूर्य और चांद, 2. प्रकट, 3. बाग की चिड़ियां, 4. बातचीत, 5. पापी,
6. सिरहाना 7. ख्याल, 8. अत्याचार 9. खोये हुए।

H-9

इश्क का पूछो पता माही[1] से या परवाने[2] से।
काम है जिन्हें तड़फ़ने से या जल जाने से।
इश्क में चीरे गये पर उफ़ तक न की,
रुतबा-ए-इश्क[3] हकीकत है उस पे मिट जाने से।
झूरना, जलना, तड़पना ये जागीर उसकी रही,
माशूक[4] में वो जी उठे प्रेम बढ़ जाने से।
दर-ब-दर[5] फिरना भटकना लिखा गया तकदीर में,
मिसाल-ए-मजनूं[6] गर्ज़ है न काबा से न बुतख़ाने[7] से।
इश्क के हाथों बिका यूसफ सर-ए-बाज़ार[8] में,
गर्ज़ है आशिक की माशूक के बहलाने से।
खाल शम्स की खैंची, मनसूर को सूली दिया,
काम क्या क्या न लिए इश्क ने दीवानों से।
नाम ज़िन्दा रहेगा 'जमाल' का अफसानों[9] में,
जी गये हैं जमाल सावन में मिट जाने से।

1. मछली, 2. पतंगा, 3. प्रेम की श्रेष्ठता, 4. प्रीतम, 5. यहां वहां,
6. मजनूं की तरह, 7. मंदिर, 8. बाज़ार के सामने, 9. कहानी।

H–10

उलफ़त[1] में किसी बात की परवाह न करेंगे,
जां[2] अपनी फ़िदा[3] सूरत–ए–परवाना[4] करेंगे।
जिससे भी बयां इश्क का अफ़सानां[5] करेंगे,
अपनी ही तरह उसको भी दीवाना करेंगे।
उलटा ही पड़ रहा है दुआओं का असर भी,
क्या चारा–ए–दर्द–ए–दिल–ए–दीवाना[6] करेंगे।
कह दो उन्हें ख़्वाबों में अब आया न करें वो,
इस तरह से फिर उन की तमन्ना[7] न करेंगे।
हां बाग़ में जा कर तेरी आंखों की कसम हम,
नरगिस को मुहब्बत का इशारा न करेंगे।
रखेंगे इसे अपने निहां खाना–ए–दिल[8] में,
इज़हार–ए–मुहब्बत[9] कभी अफ़्शां[10] न करेंगे।

1. प्रेम, 2. जान, 3. कुर्बान, 4. पतंगे की तरह, 5. उपन्यास,
6. पागल दिल का इलाज, 7. इच्छा, 8. दिल के खाने में गुप्त,
9. प्रेम प्रकट करना, 10. चमकना।

H–11

ऐ आंखो क्यों नहीं चोर बताती।
तुम हो मन मन्दिर के सिपाही, तुम ही लूट कराती।
आंखो आंखो क्यों नहीं चोर बताती।
किस को देखा कहां लगीं तुम,
क्यों न कहो कुछ सुझाती।
तुम देखो और लाख दिखावे,
मन की लागी कहीं तुम भरमा के सुनाती।
कहीं तुम भरमा के विष को पी कर पहले,
अब न हाल पछताती।
आंखो किस को देखा कहां लगीं तुम,
क्यों न कहो कुछ भाती।
तुम देखन और हम मौन को,
सदा कहो अकुलाती[1]।

1. तड़पती।

H–12

ऐ दर्द–ए–दिल[1] किसी दिन, होना जुदा न हम से,
आबाद यह मकां[2] है, तेरे ही दम कदम[3] से।
हम गम–ज़दों[4] का रोना, दुनिया की इक हंसी है,
ऐ अश्क–ए–खूं[5] संभलना, गिरना न चश्म–ए–नम[6] से।
ऐ हसरतो[7] हटो भी, हो ली मिज़ाजपुरसी[8],
हम हाल–ए–दिल कहेंगे फुरसत[9] मिली जो ग़म[10] से।
ऐ 'जमाल' इस जहां में, कोई नहीं किसी का,
देते हैं अब दिखाई, अपने बेगाने जम से।

1. दिल का दर्द, 2. मकान, 3. चमक दमक, 4. शोकग्रस्त, 5. खून के आंसू, 6. गीली आंखें, 7. इच्छाएं, 8. हाल चाल पूछना, 9. मुक्ति, 10. शोक।

H–13

ऐ बशर[1] मसजूद–ए–आलम[2] जान–ए–आलम[3] तू हुआ।
हक मुजस्सम[4], हक की तलअत[5], ज़ात–ए–हक[6] और हकनुमा[7]।
मिल के हम जिन्न–ओ–मर्द शरण लेने आ गये।
तू है प्यारा हम सभी प्यार लेने आ गये।
अशरफ–उल–मखलूक[8] है सारी ख़लकत[9] में तू सिर्फ।
अकबर–उल–मख़लूक[10] है अकमल–उल–मखलूक[11] है।
तुझ से बेहतर इस जहां में कौन है, कोई नहीं।
तुझ से बढ़ कर दो जहां में कौन है, कोई नहीं।
सजदागाह–ए–दो–जहां[12] है सब का तू मसजूद[13] है।
आदमी पर तू तो मलायक[14] का मकसद–ओ–मकसूद[15] है।
आलम–ए–कुबरा[16] में जो जो खूबी रहती है निहां[17]।
ऐ बशर वो ज़ात में तेरी सरासर है अयां[18]।
कहने को तो आलम–ए–सुग़रा[19] कहा जाता है तू।
आलम–ए–कुबरा के हैं सब ज़ात में तेरी असर।
तुझको देखा है जिसने, उसने देखी हक की ज़ात।
जितने औसाफ–ए–खुदा[20] हैं तेरी ही समझो सिफ़ात।

1. इंसान, 2. संसार का पूज्य, 3. दुनिया की जान, 4. सतस्वरूप, 5. सत का दर्शन, 6. सत की ज़ात वाला, 7. सत का मार्गदर्शक, 8. दुनिया में बड़ा, 9. दुनिया, 10. दुनिया में महान, 11. सब से पूर्ण, 12. दो जहान के सजदा करने की जगह 13. पूज्य 14. देवता 15. अंतिम लक्ष्य, 16. दुनिया में बड़ा 17. गुप्त 18. प्रकट 19. दुनिया में छोटा 20. प्रभु के गुण।

H–14

ओ राम नाम वालो सुन लो कथा हमारी,
हम भी उसी पिया की सूरत के हैं पुजारी।
बैराग ले के उस का, गीत उस के गा रहे हैं,
छोड़ा है देश सारा, प्रीतम के हैं भिखारी।
मन की बना के तूंबी, गीत उसके गा रहे हैं,
रहते जो दिलों में सब के, उस को मना रहे हैं।

H–15

कमाल–ए–ज़ात[1] कमाल–ए–सिफ़ात[2] है किस जा[3]।
इन्सान–ए–कामिल[4] में हुए ये सब यक[5] जा।
ख़ुदा को देखना चाहो तो उस को तुम देखो।
उसी की बात कहो और उसी की बात सुनो।
उस के दिल में गौर से देखा तो ठहरा है खुदा।
देखना हो खुदा को तुम बशर[6] को देख लो।

1. कमाल का व्यक्तित्व, 2. कमाल के गुण, 3. जगह, 4. मुकम्मल इंसान,
5. एक, 6. इंसान।

H–16

क्यों इतनी बुलन्दी[1] पे, काशाना[2] बनाते हो।
हम से गरीबों को, क्यों ख़ाक[3] मिलाते हो।
क्यों ख़ाक नशीनों[4] को, दीवाना बनाते हो।
सौ रूप में आते हो, सौ रंग दिखाते हो।
तुम मेरे ही सीने पे, बुतख़ाना[5] बनाते हो।
याद आते हो क्यों अकसर, रातों की खामोशी में।
राह–ए–हक में मेरी उलफत[6] को, अफसाना[7] बनाते हो।
जब दिन में टहलते हो, दरिया के किनारों पर।
जोबन भरी किरणों से, दीवाना[8] बनाते हो।

H–17

कसम[9] उस बेगुनाही की, जो रुसवाई[10] का बाइस[11] हो।
कसम उस रंज[12] की जो ख़ून के आंसू रुलाता हो।
कसम उस रहम की जो बेकसों[13] पर आ ही जाता है।
कसम उस तीर की जो दिल में चुभ कर टूट जाता है।
कसम उस दर्द की जो फ़ाका[14] मस्ती में सताता है।
कसम उस हुस्न की जो नूर के सांचे में ढलता है।
कसम उन अदाओं की जो मुझे दीवाना बनाती हैं।
कसम उन नज़र वालों की जिनसे मुझको होश आती है।

1.उंचाई 2. घर, 3. मिट्टी, 4. मिट्टी में बैठे हुए, 5. मंदिर, 6. प्रेम,
7. किस्सा, 8. पागल, 9. सौगंध, 10. बदनामी, 11. कारण, 12. दुख,
13. दुखी 14. उपवास।

H–18

कहूं किस से नहीं सुनता है, कोई दास्तां मेरी,
न सुनती है ज़मीं मेरी, न सुनता आसमां मेरी।
हुई दुश्मन ख़ुदाई[1] कुल, हुआ दुश्मन ज़माना है,
मेरी नज़रों में दुनिया का चमन[2] ये इक वीराना[3] है।
कोई जिन्न कोई वहशी[4] कोई मनहूस[5] कहता है,
मेरी सूरत से हर छोटा बड़ा बेज़ार[6] रहता है।
न इस जा पर न उस जा[7] ग़म गलत कोई भी करता है,
मेरे साए तलक से अब तो हर कोई डरता है।
मैं जाऊं भी कहां या रब्ब न जाने को है जा कोई,
पिला दे मौत का शरबत, न जीने की है चाह कोई।
मेरा जीवन ज़माने को, नज़र इक ख़ार[8] आता है,
मुझे दुनिया का खाने को, दर–ओ–दीवार आता है।
सुनायें दास्तान–ए–दर्द–ए–दिल[9] अब किस को हम जा कर,
न सुनता है कोई ग़म की कहानी पास बिठला कर।

H–19

कहे कोई जिसने लड़ाई हैं आंखें,
वही आ रहे हैं, वही आ रहे हैं।
जिन्हें देखने को भर आई हैं आंखें,
वही आ रहे हैं, वही आ रहे हैं।
खड़कता है पत्ता जो कोई पवन से,
तो आवाज़ आती है यह मेरे मन से।
कि रस्ते में जिनके बिछाई हैं आंखें,
वही आ रहे हैं, वही आ रहे हैं।
ये आहट है बेशक उन्हीं के कदम की,
वही आ रहे हैं, वही आ रहे हैं।
मैं अब कह सकूंगी कि पाई हैं आंखें,
वही आ रहे हैं, वही आ रहे हैं।

1. दुनिया 2. बाग, 3. उजाड़, 4. पागल, 5. अशुभ, 6. अप्रसन्न,
7. जगह, 8. कांटा, 9. दिल के दर्द की कहानी।

H–20

कहने देती नहीं कुछ मुंह से मुहब्बत तेरी,
लब[1] पे रह जाती है आ–आ के शिकायत तेरी।
अब तेरा ऐ दिल–ए–बेताब[2] खुदा हाफिज़[3],
कर चुके हम तो मुहब्बत में इबादत[4] तेरी।
देखिए कहता है अब किस्से ज़माना क्या–क्या,
तुझको है चाह मेरी मुझको है चाहत तेरी।
याद सब कुछ है मुझे हिज्र[5] के सदमे[6] पर भी,
भूल जाता हूं मगर देख के सूरत तेरी।
अदम[7] आबाद को जाते हैं सभी खाली हाथ,
मुझ को है नाज़[8] कि ले जाऊंगा हसरत[9] तेरी।

1. होंठ, 2. व्याकुल दिल, 3. प्रभु जाने, 4. उपासना, 5. वियोग, 6. आघात, 7. परलोक, 8. मान, 9. अभिलाषा।

H–21

काबा हो या कलीसा[1], मन्दिर हो या हो गिरजा,
जिस जा पे तुझको देखा, उस जा पे तू ही तू है।
हिन्दू भी तेरे बन्दे, मोमिन[2] भी तेरे बन्दे,
ईमान की जो पूछे, ईमान[3] सबका तू है।
ऐ दर्द–ए–दिल किसी दिन, होना जुदा न हम से,
आबाद यह मकां है, तेरे ही दम–कदम से।
ऐ शाह–ए–हुस्न[4]–ए–खुबां, दीदार गर न दोगे,
बन कर फ़कीर तेरे, दर पर सदा करेंगे।
जहां में देखने में, सीधे–सादे भोले–भाले हो,
ग़ज़ब[5] के हो, गज़ब करते हो, ग़ज़ब वाले हो।
नज़ारत–ए–काबे[6] भी हम गये, न गया बुतों का इश्क,
इलाही कैसे बतलाऊं, कि कैसे हुस्न वाले हो।

1. गिरजा, 2. खुदा का घर, 3. धर्म, 4. अति सुन्दर, 5. आफत, 6. काबे का दर्शन।

H-22

ख़ाक डालो मेरे शिकवों[1] पे न जाओ सावन।
नीची नज़रें न करो आंख उठाओ सावन।
बाद मरने के मेरे शोक से हासिल क्या है,
चुप न हो, ग़म न करो, जी न कुढ़ाओ सावन।
फिर कभी आन मिलेंगे, ये बजा[2] है लेकिन,
कोई सूरत भी तो जीने की बताओ सावन।
तुम जो आ जाओ मेरी तकदीर का शिकवा न रहे,
मेरी सोई हुई किस्मत को जगाओ सावन।
ज़ब्त[3] से राज़-ए-मुहब्बत[4] न छुपेगा ऐ 'जमाल',
डबडबाई हुई आंखें न छुपाओ सावन।

H-23

गुज़रती है जो दिल पर, मुब्तिला[5] की मुब्तिला जाने।
जो हो बेदर्द, वो दर्द-ए-दिल-ए-बेताब[6] क्या जाने।
मुकाम[7] शुक्र का है, ये मुसीबतें दुनिया।
इसी बहाने से वो प्यारा याद आता है।
धूल तक न उड़े वो नामुराद[8] हूं मैं।
जिसका चारा न हो दुनिया में, वो लाचार हूं मैं।
जलना हो इक दम का, तो मैं सब्र[9] भी करूं।
आठों पहर सुलगता है यह दिल, क्या करूं।

1. शिकायतें, 2. उचित, 3. सहन करना, 4. प्रेम का भेद, 5. जकड़ा हुआ,
6. बेचैन दिल का दर्द 7. स्थान, 8. अभागा, 9. संतोष।

H-24

चमकता नूर का सूरज है साया लमयज़ली[1] का,
रखाया नाम उसने अपना सावनशाह मुर्शिद[2] का।
रहे है मिस्ल-ए-मजनूं[3] वो सदा ही मस्त-ओ-दीवाना[4],
मुनव्वर[5] नूर[6] देखा जिसने सावनशाह मुर्शिद का।
है ज़िक्र हर इक ज़ुबां ऊपर सिफ्त[7] है हर मकां अन्दर,
हरेक जा[8] पर हुआ गोगा है सावनशाह मुर्शिद का।
मिसाल-ए-चुंबक[9] पत्थर कशिश[10] है उसकी उलफ़त[11] में,
ताअसुर[12] है अजब कुछ ऐसा सावनशाह मुर्शिद का।
अजब है सूरत-ए-जानां[13] लिया है लूट दिल मेरा,
अजब रुखसार-ए-माह-ए-अनवर[14] सावनशाह मुर्शिद का।
तसुव्वर प्यारे सत्गुर का सदा दिल में रहे बसता,
करूं मैं विरद[15] हरदम अपने सावनशाह मुर्शिद का।
दमादम याद आती है वो महवश सूरत-ए-जानां[16],
तसव्वुर फिर रहा हरदम है सावनशाह मुर्शिद का।
तलब[17] हो जिसको मौला[18] की वो जाए बार-ए-अनवर[19] में,
बसा ले इश्क अपने दिल में सावनशाह मुर्शिद का।
सरापा[20] इल्म, सरतापा[21] खूबी, शीरीं ज़बां[22] ऐसा,
जहां अन्दर न सानी[23] कोई सावनशाह मुर्शिद का।
न देखा न सुना कोई जहां में उसका है सानी,
मुझे तो नाम इक प्यारा है सावनशाह मुर्शिद का।

1. खुदाई, 2. गुरु, 3. मजनूं की तरह, 4. मस्त और पागल, 5. प्रकाशमान,
6. रोशनी 7. गुणगान, 8. जगह, 9. चुंबक की तरह, 10. खिंचाव, 11. प्रेम,
12. असर, 13. प्रीतम की सूरत, 14. प्रीतम का सुंदर चेहरा 15. यशगान,
16. प्रीतम की मनमोहक सूरत 17. इच्छा, 18. प्रभु, 19. नूरानी घर
20. सिर से पैर तक, 21. पूर्ण, 22. मधुर वाणी, 23. बराबर।

तुझे जो देख लेता है फिरे वो मस्त-ओ-दीवाना,
दमादम नाम रटता है वो सावनशाह मुर्शिद का।
सहारा दो जहानों का रफ़ीक़ -ए-जाविदानी[1] है,
है सब पर यकसां[2] लुत्फ-ए-आला[3] सावनशाह मुर्शिद का।
लब-ए-दरिया[4] पर रहता है मेरा दिलदार जानी है,
लबों पर हुक्म अफ़ज़ल[5] मेरे सावनशाह मुर्शिद का।
ज़मीन-ओ-आसमां पर सब तुझे ही याद करते हैं,
अजब दीदार[6] है दीदार सावनशाह मुर्शिद का।
नहीं ख्वाहिश है जन्नत[7] की न है परवाह हूरों[8] की,
मुझे काफ़ी दर-ए-रहमत[9] है सावनशाह मुर्शिद का।
चलो लोगो कि जिनको मौला[10] से मिलने की ख्वाहिश है,
कि दरिया फैज़[11] का जारी है सावनशाह मुर्शिद का।
न हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, न सिख का है सवाल उस जा,
सभी पर है करम[12] इक जैसा सावनशाह मुर्शिद का।
करूं क्या सिफ़्त मुर्शिद की नहीं होती बयां मुझ से,
अजब है रू-ए-पुरअनवर[13] सावनशाह मुर्शिद का।
'जमाल' तू मुर्शिद-ए-सावन की हरदम रह गुलामी में,
हमेशा दर को पकड़े रख तू सावनशाह मुर्शिद का।

1. सदा की मित्रता, 2. सब पर बराबर, 3. महान दया, 4. दरिया के किनारे, 5. महान, 6. दर्शन 7. स्वर्ग, 8. स्वर्ग परी, 9. दया का द्वार, 10. प्रभु, 11. परोपकार, 12. दया, 13. नूरानी चेहरा।

H-25

चमन[1] वाले अभी वाकिफ नहीं हैं आह-ए-बिस्मिल[2] से,
जला कर ख़ाक[3] कर देगी अगर निकली कहीं दिल से।
दम-ए-आख़िर[4] न देखी जाएगी बीमार की हालत,
वो हट जायें तो अच्छा है, कि दम निकलेगा मुश्किल से।
बता दे हम को तू इस सफ़र का हश्र[5] क्या होगा,
न मैं वाक़िफ़ हूं रस्ते से, न मैं वाक़िफ़ हूं मंज़िल से।
तलाश-ए-नाव के[6]-बेदाद[7] और दुश्मन का दिल तौबा,
इधर आ देख ले लिपटा कहीं होगा मेरे दिल से।
न कर ऐ 'जमाल' तू कुछ फिक्र ये दरिया-ए-रहमत[8] है,
यहां टूटी हुई किश्ती भी लग जाती है साहिल[9] से।

H-26

छुपाने से नहीं छुपती, यह आफ़त[10] आ ही जाती है।
ये काफिर-ओ-कयामत है, अक्सर आ ही जाती है।
मुहब्बत क्या कयामत[11] है, अजल[12] में रंग लाती है।
दिल दे दिया है उनको, देखें वो क्या करेंगे।
रखते हैं दिल को दिल में, या कि जुदा करेंगे।
ऐ शमां[12] इतनी तू सिफारिश कर, कि रुख इधर भी किया करे कोई।
दर्द हो तो दवा करे कोई, दिल के लगाने का क्या करे कोई।

1. बाग, 2. ज़ख्मी की आह, 3. मिट्टी, 4. आखरी दम, 5. अंत, 6.नाव की तलाश में 7. अन्याय, 8. रहमत का दरिया, 9. किनारा, 10. मुसीबत, 11. प्रलय, 12. प्रलय, 13. आग की लपट।

H–27

ज़ाफ़ा[1] न करना, दगा[2] न करना,
हमारे दिल का ख़्याल करना।
हमें समझना न तुम बेगाना,
न भूल जाना प्यार करना।
तुमने यह दिल किया है बिस्मिल[3],
तुम ही करो हल हमारी मुश्किल।
तुम मसीहा[4] बन कर लगाना मरहम,
इलाज करना संभाल करना।
अरे ओ भोली सी शकल वाले,
हमें वो भोला सा मुख दिखाना।
हमारे दिल की लगी बुझाना,
ओ जाने वाले हमारा भी कुछ ख़्याल करना।

1. जुल्म, 2. छल, 3. ज़ख्मी, 4. ईसा मसीह की तरह।

H-28

'जमाल' इस जहां में कोई नहीं किसी का,
देते हैं सब दिखाई अपने बेगाने जम से।
कौन आए इस अंधेरी रात में तेरे सिवा,
मेरे ग़मखाने[1] को नूरानी[2] बनाने के लिए।
दिल्लगी[3] कुछ और है दिल का लगाना और है,
कौल[4] देना और है बातें बनाना और है।
हमने परवाने[5] की सुन ली शमा[6] को दिल तो दिया,
जी का जलाना और समझना बुझाना और है।
अर्ज़ क्या पूरी न होगी मंज़िल अब तक दूर है।
क्या वो ज़माना और था और ये ज़माना और है।

1. शोक का घर, 2. प्रकाशवान, 3. हंसी मज़ाक, 4. वचन, 5. पतंगा, 6. रोशनी।

H-29

जलाकर राख कर डाला है बेपरवाही ने उसकी।
मगर इस राख में पिनहां[1] है उलफ़त[2] के शरार[3] अब भी।
तकाज़ा[4] दीद[5] का हो गर दिल-ए-बेताब[6] को प्यारे।
निगाह-ए-शौक़[7] कर सकती है परदा तार-तार अब भी।
ख्वाहिश परी की है न तमन्ना[8] है हूर[9] की।
आंखों में मेरी बस रही सूरत हजूर की।
दिला ये मकतब-ए-उलफ़त[10] है देख चुप रहना।
बड़ा गुनाह[11] यहां है अलफ़ से बे कहना।
जमाल रहने को दुनिया में मुकाम-ए-आशिकां[12]।
कूचा-ए-यार[13] में इक गोशा-ए-तन्हाई[14] है।
छुपाने से नहीं छुपता है प्यारे नशा-ए-उलफ़त[15]।
ज़रूर आंखों में उसकी कुछ वो रंगत आ ही जाती है।
इधर घरबार का खटका उधर आवाज़-ए-रूहानी।
किधर जाऊं करूं मैं क्या पड़ी दो पहलू मुश्किल है।

1. गुप्त, 2. प्रेम, 3. चिंगारियां, 4. मांग, 5. दर्शन, 6. जिस में सहन-शक्ति न हो, 7. तड़पती निगाह, 8. इच्छा 9. स्वर्ग सुंदरी, 10. प्रेम का स्कूल, 11. पाप 12. प्रेमी का घर, 13. प्रेमी की गली, 14. एकांत स्थान, 15. प्रेम का नशा।

H-30

जैसी थी पाक[1] पहले, हूं वैसी पाक अब भी।
निष्पाप है निगाह भी, दिल भी मिजाज[2] भी।
कायम है ज्यों की त्यों मेरी असमत[3] भी लाज भी।
ईमान बरकरार है, रस्म-ओ-रिवाज भी।
नेकी बदी को शाम-ओ-सहर[4] देखता है वो।
देखे न देखे कोई मगर देखता है वो।
ताहनों से मुझको यूं न ज़लील-ओ हकीर[5] कर।
दिल का तू हाल देख कलेजे को चीर कर।

1. पवित्र, 2. स्वभाव, 3. इज़्ज़त, 4. सुबह-शाम, 5. नीचा।

H-31

ज़िन्दगी अब हो गई बारेगरां[1] तेरे बगैर।
आज नाकारा है यह रूह-ओ-जां तेरे बग़ैर।
आपकी नज़रों के फिरते ही खुदाई[2] फिर गई,
मेहरबां भी हो गये ना-मेहरबां तेरे बगैर।
देख इस मंज़िल पे लाके मुझ को अब तनहा[3] न छोड़,
उम्र सारी जायेगी यह रायगां[4] तेरे बग़ैर।
एक मुद्दत से है बेरौनक मेरी दुनिया-ए-दिल,
पहले सी जज़्बात में शोखी[5] कहां तेरे बग़ैर।
राज़-ए-उलफ़त फ़ाश[6] हो जाये न यूं देख अब कहीं,
वरना थी मालूम किस को दास्तां[7] तेरे बग़ैर।
शिद्दत-ए-ग़म[8] से हुआ है मेरा सीना चाक-चाक[9],
क्या कहूं जबकि इजाज़त ही नहीं फ़रियाद की।
हुक्म है सईयाद[10] का मुझ को अरे इन्सान सुन,
काट डालूंगा ज़ुबां तेरी अगर फ़रियाद की।
ख़ून बन कर आंख से आंसू निकल आये 'जमाल',
दास्तां इक दिन ये सुन लोगे दिल-ए-बरबाद की।
ज़िन्दगी अब हो गई बारेगरां तेरे बग़ैर,
आज नाकारा है यह रूह-ओ-जां[11] तेरे बग़ैर।

1. दुखदाई, 2. दुनिया, 3. अकेला, 4. बेकार, 5. चंचलता, 6. प्रेम का भेद खुलना, 7. कहानी, 8. कष्ट की हद (बेहद कष्ट), 9. टुकड़े-टुकड़े, 10. प्रभु, 11. रूह और जान।

H-32

तुम नहीं हो तो हर खुशी ग़म है,
मुझको जन्नत[1] भी फिर जहन्नुम[2] है।
वो भी नाखुश हैं दिल भी है बे-रहम,
अख्तियार ज़िन्दगी पर अब कम है।
मुत्तहिद[3] हो रही हैं दो रूहें,
उनकी शान पे मारे सम-सम है।
रुख-ए-पुरनूर[4] कब वो आए 'जमाल',
हम हैं और इन्तज़ार पे हम हैं।

H-33

तुम ही हो चित्त चोर सावन, बने हो चित्त के चोर।
सावन की अब रुत्त है आई, काली घटा घनघोर है छाई।
बरखा का सन्देश है लाई, नाच रहे हैं मोर।
तुम ही हो चित्त चोर।
तुम बिन साजन जिया घबराये, तड़प-तड़प कर ये दिन आये।
कुछ मिलने की पेश न जाये, प्रेम की बांधी टूटी डोर।
तुम ही हो मेरे चोर।
दुख में भी जो तुम न आओ, टूटे दिल को न भरमाओ।
डूबती नैया कौन बचावे, कौन लगावे ज़ोर।
तुम ही हो मेरे चोर।
तुम बिन मुश्किल है अब जीना, छोड़ा सब कुछ खाना पीना।
हाथ में जोगी की है वीना, ध्यान है तेरी ओर।
तुम ही हो चित्त चोर।

1. स्वर्ग, 2. नर्क, 3. मिलाप करना, 4. नूरानी चेहरा।

H-34

तेरे ग़म[1] से हुई रो रो दीवानी,
तुम्हारे इश्क में रंग ज़ाफ़रानी[2]।
जिगर पारा[3] आवारा हाल हुआ,
हिज्र[4] अन्दर न कर दिलदार फ़ानी[5]।
धरो अपना कदम मेरे आंगन पर,
करो मुड़के प्यारे मेहरबानी।
खुशी जाती रही मेरी सरासर,
नज़र आती है हमेशा जाविदानी[6]।
उठा परदा ज़रा मुख से प्यारे,
दिखा रुखसार-ए-पुरनूर[7] जानी।
तेरी सूरत मनोहर माल-ए-अनवर[8],
हुए आशिक मलायक[9] आसमानी।
सावन मैं बनूं मजनूं तेरा दीवाना,
जो देखूं सूरत-ए-माह-ए-नूरानी[10]।

1. शोक, 2. पीला, 3. टुकड़ा-टुकड़ा, 4. वियोग, 5. नश्वर, 6. हमेशा रहने वाला, 7. प्रकाशवान चेहरा, 8. चमकीला, 9. देवतागण, 10. चांद सा प्रकाशवान चेहरा।

H-35

तेरी गलियों को समझता हूं प्यारे,
मेरे दर्द-ए-दिल की दवा हो रही है।
तेरी याद करने से जानी हमारी,
नमाज़-ए-मुहब्बत[1] अदा हो रही है।
भुलाता लाख हूं लेकिन,
वो अकसर याद आते हैं।
यों तो देखने में,
सीधे-सादे भोले भाले हैं।
मगर मालूम हमको,
ये कैसे हुस्न वाले हैं।

H-36

तेरे ज़ुल्म करने से साक़ी[2] हमारी,
नमाज़-ए-मुहब्बत अदा हो रही है।
क़रीब होकर भी दूर हो तुम,
फिराक़[3] है या विसाल[4] है यह।
मिले हुए भी अलग-थलग हो,
अजब तुम्हारा कमाल है यह।
नहीं है कोई भी तुम से प्यारा,
तुम्हीं से रिश्ता है बस हमारा।
बतायें किस मुंह से तुमको अपना,
बड़ा ही मुश्किल सवाल है यह।

1. प्रेम करना, 2. शराब पिलाने वाला, 3. वियोग, 4. मिलाप।

H-37

तेरे प्रेम की जिसको लगी है लगन,
तेरे दर्श का जिसको ध्यान हुआ।
तेरी राह में तन मन वार गया[1],
तेरे प्रेम ही में बलिदान हुआ।
देखी जिसने पिता तेरी थोड़ी झलक,
ऐसा मोहित हुआ अपनी सुध न रही।
देखा जिसको भी उसने आंख उठा,
तेरी महिमा का उसमें गुमान हुआ।

H-38

दर्द कुछ और बढ़ गया , हम लेने गये दवा-ए-दिल।
मेरी तरह ख़ुदा करे, तेरा किसी पे आए दिल।
तू भी जिग्र को थाम कर, कहता फिरे कि हाय दिल।
मानी हजारों मन्नतें, रज्जनाई[2] बनाये दिल।
लादो मेरी लाश को, इसमें भरी हैं हसरतें[3]।
रखना कदम संभाल के, देखो जल न जाये दिल।
गुंचा[4] समझ के ले लिया, चुटकी से फिर मसल दिया।
उनका तो इक खेल था, मिट गया मेरा हाय दिल।

1. कुर्बान कर गया, 2. शांत, 3. कामनायें, 4. कली।

H-39

दिल्लगी कुछ और है दिल का लगाना और है।
क़ौल[1] देना और है बातें बनाना और है।
हमने परवाने[2] की सुन ली शमा[3] को दिल तो दिया।
जी का जलाना और समझाना बुझाना और है।
अर्ज़ क्या पूरी न होगी मंजिल अब तक दूर है।
क्या वो ज़माना और था और ये ज़माना और है।

H-40

दुनिया क्या अपने से भी बेगाना होना चाहिए।
तेरे दीवाने को बस दीवाना होना चाहिए।
मैं तेरा दीवाना बन कर सबसे बेगाना रहूं।
दीवानगी को भी मेरी दीवाना होना चाहिए।
हर नज़र में तुम ही तुम हो हर तरफ़ हो तुम ही तुम।
जब तुम ही तुम हो तो फिर पर्दा न होना चाहिए।

1. ज़बान देना 2. पतंगा, 3. आग की लपट।

H-41

दुनिया-ए-हुस्न-ओ-इश्क[1] का अरमान[2] तुम ही तो हो।
मैंने दिया है दिल जिसे ऐ जान तुम ही तो हो।
पज़ मुर्दा[3] दिल शगुफता[4] हुआ जिसको देख कर।
बाग़-ए-जहां[5] में वो गुल-ए-ख़न्दां[6] तुम ही तो हो।
हर रंग में तुम्हारे सिवा और कौन है।
हर फूल के लिबास में पिनहां[7] तुम ही तो हो।
क्या कहिये किसकी जुल्फ़ के दीवानों में हैं हम।
अपनी नज़र में वो परी-रुख़सार[8] तुम ही तो हो।
जो जलवागर[9] है गोशा-ए-दिल[10] में वो कौन है।
मैं कह रहा हूं जिसको मेरी जान तुम ही तो हो।
हर वक्त पेश-ए-दीदा-ए-हैरान[11] तुम ही तो हो।
कुदरत का उसकी कार-ए-नुमायां[12] तुम ही तो हो।
क्योंकर तुम्हारे दीद का मैं अरमान निकालूं।
इस ग़मकदे[13] में ऐश-ए-बदामां[14] तुम ही तो हो।
मसजूद-ए-एहल-ए-इश्क[15] तुम्हारे सिवा है कौन।
चाहा किया जिसे ये दिल-ओ-जान तुम ही तो हो।

फुटकल

मुहब्बत की निगाहों से तेरी तसवीर देखेंगे।
मेरे पहलू में आयेंगे, जिन्हें मैं प्यार करता हूं।
मेरे ऐ बाबू अब से फिर मेरी तक़दीर देखेंगे।

1. दुनिया का असली प्रेम 2. लालसा, 3. पहाड़ की तरह मुर्दा 4. खिला हुआ, 5. दुनिया के बाग, 6. खिला हुआ फूल, 7. गुप्त 8. परी का सुन्दर चेहरा, 9. प्रकट, 10. दिल का कोना, 11. हैरान आंखों के सामने, 12. करिंदे, 13. शोकग्रस्त घर, 14. हमेशा की खुशी, 15. प्रेम का मंदिर।

H-42

नज़र में उनका तसव्वुर[1] है वो हैं ना मालूम।
पता ही उनका है मालूम और न जा[2] मालूम।
निगोड़ी हिचकियां देती तो हैं पयाम[3] उनका।
मगर वो लाएंगे तशरीफ कब खुदा मालूम।
ख़ुदा जाने समाए किस तरह हैं मेरी आंखों में।
ये आंसू वरना इक तूफ़ां बरपा[4] करने वाले हैं।
चैन आता ही नहीं दम भर फ़िराक-ए-यार[5] में।
कब तलक तड़पा करूं मैं या इलाही क्या करूं।

H-43

न मरने की ख्वाहिश न जीने की आस,
मेरी ज़िंदगी भी है कितनी उदास।
न छेड़ो मेरी रूह के साज़ को,
कि तुमको भी होना पड़े न उदास।
मुहब्बत को समझा है मैंने जनून[6]।
ठिकाने नहीं मेरे होश-ओ-हवास[7]।
है ज़ाहिर में गो[8] उसके रंग और बू,
हकीकत[9] में है यह जुनूं का लिबास।

1. ख्याल, 2. जगह, 3. संदेश, 4. मचाना, 5. प्रीतम का वियोग,
6. पागलपन, 7. अकल, 8. चाहे, 9. असल।

H-44

नाज़[1] की कुरबान है, सौ जान से बलिहार है।
हां बहार-ए-रू[2]-ए-सावन ग़ैरत गुलज़ार[3] है।
दिलबरी[4] फिर सादगी, तमकनत[5] फिर जां फ़जां[6]।
रूह-ए-परवर[7] दिल-कुशा[8] सावन की है हर इक अदा।
शरमगीं वो मस्त आंखें, शरमगीं पुरकैफ[9] बात।
ले तसव्वुर[10] में बलायें[11] जिनकी आबिद[12] बार-बार।
मरकज़-ए-उश्शाक[13] तू, सरचश्मा-ए-हुब्ब-ओ-प्यार[14]।
तू बेकस[15] की दवा, बेबसों का ग़म गुसार[16]।
महवर-ए-असमत[17] है तू, पैकर-ए-शर्म-ओ-हया[18]।
राह-ए-असियां[19] में गुनहगारों का तू है रहनुमा[20]।
देख कर तुझ को प्यारे, दिल में आता है ख़्याल।
तुझ पर कुदरत कर चुकी ख़त्म है अपना कमाल[21]।

H-45

निकालूं किस तरह अरमान अब मुश्किल ही मुश्किल है।
वहां टूटा हुआ ख़ंजर, यहां टूटा हुआ दिल है।
मेरा दिल ही समझता है, उठा है दर्द जो दिल में,
छुपाना भी नहीं बस का, न कुछ कहने के काबिल है।
बुरा हो परदादारी का, कि हैं दोनों मुसीबत में,
कहीं बेताब[22] बिस्मिल[23] है, कहीं बेचैन क़ातिल है।

1. नख़रा, 2. चेहरे की शोभा, 3. कमाल की फुलवाड़ी, 4. दिल चुराना, 5. स्थाई,
6. शोभा, 7. रूह का पालन पोशन करने वाला, 8. दिल बहलाने वाला, 9. नशीली,
10. ख्याल करना, 11. मुसीबत, 12. भक्त, 13. प्रेम का केन्द्र, 14. प्रेम का बड़ा चश्मा,
15. लाचार 16. दुख दर्द हरने वाला, 17. पवित्रता का अग्रमी, 18. लाज का स्वरूप,
19. रूहानी मार्ग, 20. मार्गदर्शक, 21. कला 22. व्याकुल, 23. ज़ख्मी।

H-46

प्यारे तेरी तकरीर[1] क्या है, बर्क-ए-बातिन[2] सोज़[3] है।
बर्क-ए-बातिन सोज़ है रम्ज़[4] हर इक आप की।
बर्क से भी ज़ूद-असर[5] प्यारे तेरी गुफ़्तार[6] है।
खल्क[7] कुछ इस लिये भी कुर्बान है, बलिहार है।
प्यारे तेरा उपदेश अमृत है, ज़माने के लिये।
है लिया अवतार तूने, हरि से मिलाने के लिये।
बेशतर[8] खिंच जाता है, जो देख पाता है तुझे।
ग़ैर ग़ैरियत[9] में भी हर जा है, अपनाता तुझे।
ज़िन्दगी में याद-ए-सावन दिल से क्योंकर जायेगी।
सूरत-ए-सावन पेश-अज़-मर्ग[10] भी लौट आयेगी।

1. प्रवचन, 2. मन की गुप्त, 3. जलन, 4. गुप्त ईशारा, 5. जल्दी असर करने वाली,
6. वाणी, 7. दुनिया, 8. अधिक, 9. परायापन, 10. मृत्यु से पहले।

H-47

पिया बिन सूना है संसार।
जब से रूठ गये हो सावन बिरह की आग लगाये।
मुश्किल से काटे हैं दिन रैन, जीना है दुश्वार[1]।
काली काली घोर घटाएं, मोर पपीहे शोर मचाएं।
पापी नैना भर भर आयें, दुख की है भरमार।
टूटी नैया दूर सफ़र है, डूंघी नदिया जोबन पर है।
उठें लहर और बड़े भंवर हैं, कौन लंघावे पार।
रैन अन्धेरी और अन्धेरी, अन्ध बना संसार।
सूझत नाहीं मो को सावन, अब अपना हाथ पसार।
गर गर गर गर बादल गरजे, बरसत मेघ अपार।
कहां खड़े हो मालिक मेरे, मेरे जीवन आधार।
प्रीतम मेरे मेरे साथी, मेरे अपने प्यार।
आओ पगली के पागल सुपने, खुला हुआ है द्वार।
घुमड़ घुमड़ कर आये बदरिया, रैन घिरी घन घोर।
बिरही को कबहूं कल नाहीं, आंसू बहें हर ओर।
टप टप टप टप बुन्दिया बरसे, टप टप नैनन नीर।
तड़प-तड़प कर बिजली तरसे, तड़पे ये मन मोर।
छाई घटा घनघोर, पिया बिन सूना है संसार।

1. कठिन।

H-48

फलक[1] को इस कद्र जी भर के गर मुझ को रुलाना था,
मेरा दिल भी मेरे अल्लाह पत्थर का बनाना था।
बना के अश्क[2] गर मुझ को निगाहों से गिराना था,
तो क्यों ऐ शोख़[3] तूने मेरी नज़रों में समाना था।
यूं ही गर नीम-बिस्मिल[4] छोड़ कर जो मुझ को जाना था,
तो तेग़-ए-नाज़[5] से ऐ जां मुझे बेजां बनाना था।
मेरा दिल ऐ सितमगर[6] काबिल-ए-ज़ोर-ओ-जफ़ा[7] तो न था,
तेरा ही जा-ए-मस्कन[8] था, तेरा ही वो ठिकाना था।
नहीं है दखल मुझ को तेरी मर्ज़ी में मगर मौला[9],
हवास-ओ-होश क्यों बख्शे थे जो दीवाना बनाना था।
मुझे भी मौत देकर साथ ले चलते मेरे सावन,
करम[10] इतना तो कर देते जो यूं बिस्मिल[11] बनाना था।

1. आकाश, 2. आंसू, 3. चंचल, 4. अधमरा, 5. अभिमानी तलवार, 6. अत्याचारी,
7. अत्याचार के काबिल, 8. रहने का स्थान, 9. प्रभु, 10. मेहरबानी, 11. ज़ख्मी।

H-49

फ़ुरकत[1] में आंसुओं की क्योंकर रुके रवानी।
शोले[2] भड़क-भड़क कर बरसा रहे हैं पानी।
दिल की लगी इलाही[3] कब तक न सर्द होगी,
बहता रहेगा कब तक आंखों से गर्म पानी।
हर लम्हा बेक़रारी[4], हर आन[5] आंख पुरनम[6],
सावन ये दर्द-ए-उलफ़त[7] शायद है जाविदानी[8]।

फुटकल

तीर इस अन्दाज़ से फेंका निगाहे-नाज़[9] ने,
लाख रोका मैंने लेकिन दिल निशाना हो गया।
अब ज़रूरत क्या रही दैर-ओ-हरम[10] की ऐ 'जमाल',
वक़्फ़[11] सिजदों[12] के लिए जब आस्ताना[13] हो गया।

H-50

बरबाद कर चुका हूं ख़ुद आशियां[14] को मैं,
बेकार अब समझता हूं आह-ओ-फ़ुगां[15] को मैं।
साकी[16] की इक निगाह है काफी मेरे लिये,
मुंह से लगाऊंगा न मय-ए-अरग़वां[17] को मैं।
सावन तुम्हारी याद से होता है शाद[18] दिल,
करता हूं रोज़ याद ख़ुदा-ए-जहां[19] को मैं।

1. याद, 2. लपटें, 3. हे प्रभु, 4. हर समय बेचैनी, 5. हल पल, 6. गीली, 7. प्रेम की पीड़ा, 8. हमेशा रहने वाला, 9. नखरे वाली आंखें, 10. मंदिर-मस्जिद 11. प्रभुअर्पण, 12. पूजा, 13. घर, 14. घोंसला, 15. हाय दुहाई 16. शराब पिलाने वाला, 17. उत्तम लाल शराब, 18. शांत, 19. दुनिया के प्रभु।

H-51

मलायक[1] से, बशर[2] से, हूर[3] से, सबसे सिवा[4] निकले।
हमारे शहन्शाह दोनों जहानों से जुदा निकले।
खुली जब आंख तो इन्सां के जामे[5] में खुदा निकले।
समझते थे उन्हें हम क्या इलाही[6] और वे क्या निकले।
ख़ुदा जलवानुमा[7] उनमें, ख़ुदा में वो फ़ना[8] निकले।
न वो उनसे जुदा निकला, न वो उससे जुदा निकले।
मुहब्बत में वो कुछ इक दूसरे की मुब्तिला[9] निकले।
ख़ुदा उन पर फ़िदा निकला, ख़ुदा पर वो फ़िदा[10] निकले।
वजूद-ए-ख़ाक-ए-आलम[11] में वो इसरार-ए-बक़ा[12] निकले।
इसी कूचे[13] खुदा खुद था इलाही वो ख़ुद ख़ुदा निकले।
चलो दीदार कर लो आज ही सत्संग में उनका।
ख़ुदा जाने क़यामत[14] कब हो और क्या माजरा[15] निकले।

H-52

मिसाल-ए-अश्क[16] गर मुझको निगाहों से गिराना था,
तो क्यों ऐ शोख-दीदा[17] मेरी नज़रों में समाना था।
यों ही गर नीम-बिस्मिल[18] छोड़ कर मुझ को जाना था,
तो तेग़-ए-नाज़[19] से ऐ जां मुझे बेजां बनाना था।
ग़म-ए-हिजरां[20] से तंग आकर तेरी फ़ुरक़त[21] में घबरा कर,
छुपे मुंह जो रोता था वो तेरा ही दीवाना[22] था।

1. देवता, 2. इंसान, 3. स्वर्ग परी, 4. निराले, 5. चोले, 6. हे प्रभु, 7. प्रकट, 8. लुप्त, 9. एक रूप, 10. कुर्बान 11. मिट्टी का शरीर, 12. सदा रहने वाला भेद, 13. तंग गली, 14. प्रलय, 15. घटना 16. आंसू की तरह, 17.चंचल आंख वाला, 18. ज़ख्मी, 19. अभिमानी की तलवार, 20. वियोग का दुख, 21. याद, 22. पागल।

H-53

मुहब्बत गिरिया-ए-खामोश[1] बनकर बह निकलती है।
मुहब्बत अश्क[2] बनकर आंखों से गोहर[3] उगलती है।
मुहब्बत नाउम्मीदी से हमेशा दूर रहती है।
मुहब्बत हर मुसीबत ख़न्दा-पेशानी[4] से सहती है।
मुहब्बत सोज़[5] की तसवीर बनकर जगमगाती है।
मुहब्बत साज़-ए-फ़ुरकत[6] पर अनोखे गीत गाती है।
मुहब्बत रूह-ए-बेदारी[7] में दिल को गुदगुदाती है।
मुहब्बत के तसव्वुर[8] से खुशी भी झूम जाती है।
मुहब्बत की ज़बां से हो नहीं सकता कभी शिकवा[9]।
मुहब्बत खामोशी से दिल में कर लेती है घर अपना।

1. खामोश आंसू, 2. आंसू, 3. मोती, 4. हंसते हुए, 5. जलन, 6. याद, 7. रूह की जागरुकता, 8. ध्यान, 9. शिकायत।

H-54

मेरे काशाना-ए-दिल[1] पर, जनून[2] की हुक्मरानी है।
शहीद-ए-इश्क[3] हूं हासल, हयात-ए-जाविदानी[4] है।
दिल-ए-मुज़तर[5] में या रब्ब, दर्द उठता है रह रह कर।
कोई तीर-ए-नज़र है, या बला-ए-आसमानी है।
निगाह-ए-नाज़-ए-कातिल[6] ने, हमारा ही जिग्र ताका।
ये उनके हुस्न-ए-पैकां[7] की, कितनी मेहरबानी है।
ज़ुबां पर आह, दिल में दर्द, ज़ाहिर बशाश चेहरा है।
जनून-ए-इश्क में मेरी, यह अपनी ज़िन्दगानी है।
तलाश-ए-मंज़िल-ए-राहत[8], असूल-ए-ज़िंदगानी[9] है।
यह उलफत[10] में मर मिटना, हयात-ए-जाविदानी है।
तुम्हारा हुस्न है रौनक़, फिज़ा-ए-गुलशन-ए-आलम[11]।
तुम्हारा जलवा-ए-रुख[12], शमा-ए-बज़्म-ए-ज़िन्दगानी[13] है।
सर-ए-महफ़िल[14] सुनाता हूं, जिगर को थामकर बैठो।
हिकायत-ए-दर्द[15] की है, और दर्द-ए-उलफ़त[16] की कहानी है।
मेरे काशाना-ए-दिल पर, जनून की हुक्मरानी है।

1. दिल रूपी घर, 2. पागलपन, 3. प्रेम में गर्क, 4. सदा रहने वाला जीवन, 5. तड़पता हुआ दिल, 6. क़त्ल करने वाले की नखरेबाज़ निगाह, 7. भाले की सुंदरता, 8. शांति की मंजिल की तलाश, 9. ज़िंदगी का असूल, 10. प्रेम 11. दुनिया के बगीचे की सुंदरता बढ़ाने वाला, 12. चेहरे की सुंदरता, 13. सभा की रोशनी की जान, 14. सारी सभा में, 15. दर्द की कहानी 16. प्रेम की पीड़ा।

H-55

मेरे दिल को बना लो घर अपना,
आंखों में बसेरा करो न करो।
मन मन्दिर छोड़ न जाओ कहीं,
मेरे डेरे में डेरा करो न करो।
बिरहा प्रेम का फन्दा फोड़ा है,
मज़बूत हज़ारों ज़ंजीरों से।
तुम भगत के वश में हो भगवन,
भगतन का चेता करो न करो।
रहती है सुगन्ध ज्यों फूलों में,
मधु में मिठास माखन दूध में।
त्यों ही आज हृदय में वास करो,
चाहे मोक्ष भी मेरा करो न करो।
तन मन में बसो मेरे तुम ही सदा,
चाहे ध्यान इधर को करो न करो।

H-56

मैं रस्म-ए-जहां[1] से हूं कुछ सोच के बेगाना।
कहती है तो कहने दो, दुनिया मुझे दीवाना।
है ज़ौक-ए-तलब[2] मेरा या नज़र-ए-करम[3] उनकी।
फ़िरता दर-ए-सावन पर सूरत है गदायाना[4]।
अब ज़ीस्त[5] की क्या परवाह, अब मौत से क्या डरना।
हम खुद को समझते हैं खाक-ए-दर-ए-जानाना[6]।

1. सांसारिक रिवाज, 2. मांगने की इच्छा, 3. कृपा दृष्टि, 4. भिखारी, 5. जीवन, 6. प्रीतम के दरवाज़े की धूल।

H-57

मैं तेरा ही दीवाना हूं प्यारे मेरे सावन,
अपने से भी बेगाना हूं प्यारे मेरे सावन।
मयख़ाने से तेरे में कहीं जा नहीं सकता,
ख़ाक-ए-दर-ए-मयख़ाना[1] हूं प्यारे मेरे सावन।
कुरबान मेरा दिल है मेरी जान-ए-तसद्दुक[2],
तू शमा[3] है मैं परवाना हूं प्यारे मेरे सावन।
मखमूर[4] निगाहों का तेरी रोज़-ए-अजल[5] से,
मस्ताना हूं, मस्ताना हूं प्यारे मेरे सावन।

H-58

मैं पाक[6] मुर्शिद की खाक-ए-पा[7] को,
लगाऊं सर पर उठा उठा कर।
है मस्त-ओ-बेखुद[8] बनाया मुझ को,
शराब-ए-वहदत[9] पिला पिला कर।
थी इतनी मुझ में भरी यह हसरत[10],
नजुज़[11] में इन्सां कुछ भी समझूं।
मिटाया सदियों का कुल अन्धेरा,
तूने दीपक जगा जगा कर।
मैं खुद को समझा था महज़[12] बन्दा,
है चन्द रोज़ा कयाम[13] इस जा[14] पर।

1. शराबखाने के द्वार की धूली, 2. जान कुर्बान, 3. आग की लपट, 4. नशीली, 5. प्रलय का दिन, 6. पवित्र, 7. चरण धूली, 8. मस्त 9. प्रभु भक्ति का नशा, 10. इच्छा, 11. अखंड, 12. केवल, 13. ठहराव, 14. जगह।

बनाया मुझ को है जात-ए-यज़दां[1],
खुदी[2] को मेरी मिटा मिटा कर।
फिरा मैं जंगल में एक मुद्दत,
तलाश-ए-रब्ब[3] में कहां वो होगा।
बफ़जल-ए-मुर्शिद[4] है अब वो हाज़िर,
थका था जिस को बुला बुला कर।
निगाह-ए-रंज-ओ-अलम[5] ने हिज्र[6] के,
सुनाई ग़म की कहानी सारी।
था तब भी मैं तो बगल में तेरी,
कहा ये मुझ को सुना सुना कर।
हज़ार कुलफ़त[7] उठाई मैंने,
ये सुन के ख़ाली वो मुस्कराये।
मिटाया रंज-ओ-अलम को मेरे,
गले से अपने लगा लगा कर।
है हुस्न-ए-जानां[8] बयां से बाहर,
न आंख को है ताब-ए-दीदन[9]।
बसे हैं पूर्ण जहां मैं देखूं,
नज़र को अपनी उठा उठा कर।

1. प्रभु भक्त, 2. अहंकार, 3. प्रभु की तलाश, 4. गुरु कृपा, 5. दुख दर्द भरी नज़र,
6. वियोग, 7. परेशानी, 8. प्रीतम की शोभा, 9. ताब सहने की शक्ति।

H-59

ये नया पहलू निकाला दिल जलाने के लिये।
कुछ न कुछ लिख देते हो, मुझ को रुलाने के लिए।
तुम नहीं आते तो आ जाती तुम्हारी याद ही।
कोई तो हो दिल की दुनिया को बसाने के लिये।
दस्त-ए-नाज़ुक[1] से कलम का ख़ंजर[2] उठाना क्या ज़रूर।
ख़म-ए-अबरू[3] है क्या कम ख़ून बहाने के लिये।
प्यारे तेरा इन्तज़ार करता हूं मैं रात-दिन,
शोक को बेकरार करता हूं।
तू मेरे साथ लाख कज़-अदाही[4] कर,
फिर भी तेरा मैं एतबार करता हूं।
जान सी चीज़ हो फिदा[5] तुझ पर,
मैं तिशना-ए-दीदार[6] रहता हूं।
प्यार करना सिखा दिया तूने,
इस लिये तुझ से प्यार करता हूं।
लगती है जिस गुनाह-ए- मुहब्बत[7] पर ताज़ीर[8],
मैं वो ही बार-बार करता हूं।
मुझे अपनी आगोश-ए-मुहब्बत[9] से दूर न कर देना,
क्योंकि मैं तुझ से प्यार करता हूं।

1. नर्म हाथ, 2. तलवार, 3. भृकुटी का टेढ़ापन, 4. टेढ़ा नखरा, 5. कुर्बान,
6. दर्शन का इच्छुक, 7. प्रेम का गुनाह, 8. सज़ा, 9. प्रेम की गोद।

H-60

लागी लागी सब कहें, लागी बुरी बलाये।
लागी उसको जानिए, जो आर-पार हो जाये।
अब लागी नाहीं छूटे, चाहे जिया जाये।
अरी मोरा जिया जाये, अरी मोरा जिया जाये।
इस उलफ़त-ए-बे-दीन[1] का बुरा हो चलन।
छूटती नहीं है लगन चाहे जिया जाये।
लाख ठुकराओ भले, पांओं में क्या होता है।
सर उसी के कदमों पे फ़िदा[2] होता है, चाहे जिया जाये।
सर कभी धड़ से जुदा होता है, चाहे जिया जाये।

H-61

लानत है तुझ को ऐ दिल, दुनिया से दिल लगाया।
बदले में इस के क्या क्या, बार-ए-अलम[3] उठाया।
सौदा-ए-खाम[4] था सब, कुछ भी न हाथ आया।

1. बिना धर्म का प्रेम, 2. कुर्बान, 3. दुख दर्द, 4.झूठा व्यापार।

H-62

वफूर-ए-कैफ[1] से दिल इतना बेकरार[2] न हो।
मैं डर रहा हूं कि मुन्तज़िर[3] निगाह-ए-यार न हो।
शरीक-ए-इश्क[4] गर अकल परदादार न हो।
नज़र के सामने कुछ भी सिवाय-ए-यार न हो।
दिखाऊं दाग-ए-मुहब्बत[5] जो हो कसूर मुआफ़,
सुनाऊं किस्सा-ए-फ़ुरकत[6] जो नागवार[7] न हो।
उन्हें तो देख कर आइना-ए-वहम[8] आता है।
कि यह किसी की चश्म-ए-इन्तज़ार[9] न हो।
अजब ज़माना है करता नहीं इसे तसलीम[10]।
किसी सबब से बज़ाहिर[11] जो बेकरार[12] न हो।
मज़हब-ए-इश्क[13] में जायज़ हो यकीनन।
चूम लूं लब-ए-लाली[14] भी अगर वो आर[15] न हो।

H-63

सखी वो कितने सुंदर थे, मैं सेवक थी वो मंदिर थे।
रुख-ए-सावन पर आई थी लाली, झुकी हुई थी डाली डाली।
मैं बाहर थी वो अन्दर थे, सखी वो कितने सुन्दर थे।
साजन हम संग करे कलोल, मुख से बोले मीठे बोल।
नैन दिये हृदय के खोल, मैं सेवक थी वो मन्दिर थे।
छवि उनकी निराली थी, सूरत भोली भाली थी।
वो चौदवीं की रात के चन्द्र थे, सखी वो कितने सुन्दर थे।

1. नशे की बहुतायत, 2. व्याकुल, 3. इंतज़ार में, 4. प्यार में सांझीदार, 5. प्रेम का दाग, 6. याद की कहानी, 7. नापसंद, 8. मुंह देखने वाले शीशे का भ्रम, 9. इंतज़ार भरी आंख, 10. अंगीकार, 11. प्रकट, 12. व्याकुल, 13. प्रेम का धर्म, 14. होठों की लाली, 15. ना पसंद।

H-64

साकिया[1] वो मय पिला, जो तेरे मयखानों[2] में है।
इस में वो मस्ती मिला, जो तेरे मस्तानों में है।
न उसे मस्जिद में पाया, न वो बुतखानों[3] में है।
वो दुर-ए-मकसूद[4] सावन, तेरे पैमानों[5] में है।
किस्सा-ए-फरहाद-ए-मजनूं[6] बेअसर हो दास्तां।
जल के मर जाने की हसरत[7], अब भी परवानों[8] में है।

H-65

साकिया वो मय[9] पिला, न होश रहे न हम।
ऐसी पिला दे साकिया, न होश रहे न ग़म, न तू रहे न हम।
शम्स को ऐसी पिलाई, पी के मतवाला हुआ।
ऐसा मतवाला हुआ, न होश रही न चम।
कोई कहता है तू ही तू है, तू ही तू है।
कोई कहता है हम ही हम हैं, हम ही हैं हम।
आंखों आंखों से पिला दी मेरे साकी ने।
'जमाल' को ऐसी पिलाई, पी के मतवाला हुआ।
देखते-देखते ही रह गया, न तू न हूं, न तू रही न हम।

1. शराब पिलाने वाला, 2. शराबखाने, 3. मंदिरों, 4. आदर्श मोती, 5. वचनों,
6. फरहाद और मजनूं की कहानी, 7. चाहत, 8. पतंगों, 9. शराब।

H-66

सावन कभी आओ, कभी आओ, कभी आओ।
उजड़ी हुई दुनिया को मेरी आ के बसाओ।।
तुम पास नहीं कौन सुने मेरी कहानी।
सावन कभी आओ तो सुनो मेरी ज़बानी।
मैं तेरे सिवा किस को कहूं यह तो बताओ।
उजड़ी हुई दुनिया को मेरी आ के बसाओ।।
जोबन पे जवानी है और चांदनी रातें।
तुम भूल गये सावन क्यों प्यार की बातें।।
जब प्रीत लगाई है तो अब तोड़[1] निभाओ।
उजड़ी हुई दुनिया को मेरी आ के बसाओ।।
आंखों ने तेरी याद में सौ अश्क[2] बहाए।
आहों ने मेरे सीने में तूफ़ान उठाए।।
रोते हुए हृदय को मेरे आ के हंसाओ।
सावन कभी आओ, कभी आओ, कभी आओ।।

1. अंत तक, 2. आंसू।

H-67

सावन गले लगा कर बाहों का हार डालो।
शैदा[1] बना के अपना उलफ़त[2] में मार डालो।
आंखों में बस रहे हो, घर दिल में कर चुके हो।
अब तो हया[3] का परदा रुख[4] से उतार डालो।
मजनूं की कब्र पर ये कुत्बा[5] लगा हुआ था।
नाम-ए-वफा[6] पे सब कुछ तन मन भी वार[7] डालो।
उलफ़त में हाय अब तो इक जान बच रही है।
उसको भी ऐ 'जमाल' अब बाज़ी में हार डालो।

1. मोहित, 2. प्रेम, 3. लज्जा, 4. चेहरा, 5. नोटिस बोर्ड, 6. भक्ति के नाम पर, 7. कुर्बान।

H-68

सोज़म मिसाल-ए-आहन[1] दर[2] आतिश-ए-जुदाई[3]।
है चोट चोट ऊपर, देता है दिल दुहाई।
गोहर[4] फिरा हकीकत[5] अज़[6] दर्द-ए-हकीमां।
बस देखना है उसका, फुरकत[7] की है दुहाई।
ज़ालम अज़ां[8] ज़माना-ए-आशिक चश्म-बादिलबर[9]।
बेदिल से कोई पूछे है कैसी दिलरुबाई[10]।
बू-ए-ख़बर[11] मरांगर इश्क सीना-ए-सोज़ी[12]।
करत न भूल करां मैं शमा रू से आशनाई[13]।
ओहाकम बाखलक दीदम[14] को खुद आलम-ए-नुमाई[15]।
औरों को तो करते कितनी ही रहनुमाई[16]।
अज़ जान-ए-खुद खरीदम सौदाए-ए-इश्क जानां[17]।
हो जिसके घर न बेटी क्या कीमत-ए-जुदाई।
दानद[18] बहा-ए-वसलत[19] को दूर शुद ज़े दिलबर।
टूटे तो कोई ओज़ां है कद्र-ए-मोमनाई[20]।
रफतम बा कुये जानां[21] बा कसवत-ए-जुदाई[22]।
देखा जो वहां तमाशा, नहीं बीच बादशाही।

1. जलते लोहे की तरह, 2. द्वार, 3. वियोग की आग, 4. मुक्ता, 5. सच्चाई, 6. तरफ, 7. याद 8. बढ़कर, 9. जिस आंख में प्रभु बसा हो, 10. हावभाव, 11. खबर की भनक, 12. बेचैनी, 13. मोमबत्ती की लपट से मित्रता, 14. दुनिया की आंख वाला, 15. दुनिया दिखाना, 16. मार्गदर्शन, 17. प्रीतम के प्रेम का सौदा खरीदने की तरह , 18. ज़बरस्ती, 19. मिलाप की कीमत, 20. आस्तिकता की कद्र, 21. प्रीतम की गली, 22. सख्त वियोग।

H-69

हम में भी न थी कोई बात,
याद ने तेरी भुला दिया।
हम न तुझे भुला सके,
तुम ने हमें भुला दिया।
न सुन सके तुम किस्सा-ए-ग़म।
सुनेगा कौन जिसने दिया है ग़म।

H-70

हरि बिन जीवन कौने काम।
सकल सम्पत्ति और मान-बढ़ाई, दीसे सकल बात ये ख़ाम[1]।
स्वांस दो धारा बहती जाए, हर घड़ी आठों जाम[2]।
हरि बिन जीवन कौने काम।
नाम न जपेयो सदा मदमाता, खो बैठेयो अपना निज धाम।
सकल मतों में केवल हरिनामा, बिन रस चाखे जीवन कौने काम।
हरि बिन जीवन कौने काम।
हरि नाम सम जग कुछ नाहीं, खोल देखो वेद कुरान।
हरि हरि करते उम्र गंवाई, अब तो कर ले अपना जान।
हरि बिन जीवन कौने काम।
हे हरि जी मो को कर ले अपना, बिन पैसे बिन दाम[3]।
हरि जी दास की सुन लो पुकारा, थक आए प्रभु तेरी छाम[4]।
हरि बिन जीवन कौने काम।

1. नाश्वान, 2. पहर, 3. मोल, 4. छाया।

H-71

हरि मो को ले चल अपने धाम।
मन इन्द्री रस लोभ लुभाना, बसेयो हाड मांस को चाम।
हरि मो को ले चल अपने धाम।
तन मन के पिंजरे में बैठ कर, भूल गयो अपना धाम।
मोह माया का रूप हो गयो, बसेयो जादू के धाम।
हरि मो को ले चल अपने धाम।
अब निकसूं कर निकसेया जाए, कर बैठेयो इसमें बिसराम।
हरि सत्गुरु मोहि आन बचाओ, नहीं तो पड़ा रहूं इस ग्राम।
हरि मो को ले चल अपने धाम।
बात बनाऊं करूं कुछ नाहिं, कस पहुंचूं प्रीतम तोरे गाम।
घट के पट खोलो मोरे हरि जीओ, मैं तो हार पड़ा तेरी छाम।
हरि मो को ले चल अपने धाम।
मैं अवगुण भरा कोई गुण नाहिं, किस मुंह से करूं प्रणाम।
आपन बिरद आप करि राखेयो, हरि जी दास ऊपर सिर छाम।
हरि मो को ले चल अपने धाम।

H-72

हे सत्गुरु अब फिर दिखाओ, रुख-ए-अनवर[1] मुझे अपना।
वो मुखड़ा नीम-बिस्मिल[2] को, जल्द आकर दिखा अपना।
वो मीठी धुनि जो तेरी है, उसे आकर सुना दे तू।
रंज-ओ-महल[3] में उलझा हूं, मुझे आकर बना अपना।
जुदाई में तेरी राह में, सुबह-ओ-शाम फिरता हूं।
किनारे तू लगा आकर, नहीं इस जा[4] कोई अपना।
यहां देखा वहां देखा, मगर न हाथ में आया।
कहूं मैं क्या बता तू खुद, तू क्योंकर बने अपना।
सिवाय तेरे हे सत्गुरु, न सूझे यहां मुझे कोई।
जो सारी अपनी बीती का, सुनाऊं माजरा[5] अपना।

1. अति सुंदर चेहरा, 2. अधमरा, 3. शोकग्रस्त, 4. जगह, 5. घटना।

H-73

हैं चरचे आसमानों में ज़मीं वालों का क्या होगा।
खबर आई खुदा खुद जाएगा खुद रहनुमा होगा।
कोई बोला कि कैसे जाएगा वो बन्दों की बस्ती में।
सदा[1] आई कि बन्दों के लिये बन्दा बना होगा।
हैं चरचे आसमानों में.....
जो पूछा कैसे पहचानेंगे बन्दे तो जवाब आया।
वो यकता हुस्न[2] में होगा वो औरों से जुदा होगा।
हैं चरचे आसमानों में.....
बुतों को होश कैसे आयेगी और कैसे उन्हें बुलायेगा।
वो सोज़-ए-इश्क[3] से खींचेगा और नग़मा सरा[4] होगा।
हैं चरचे आसमानों में.....
बुतों पर जो सज़ा वाजिब है कि उसका क्या होगा।
कहा वह बख्श दे रहमत से उन सबको तो क्या होगा।
हैं चरचे आसमानों में.....

1. आवाज़, 2. अनुपम सुन्दरता, 3. प्रेम की जलन, 4. ध्वनि रूप।